VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 13 SEP 2023 No. 3
RECEIVED

ESSAY

Name of Candidate	Devesh Parashar.		Test Code	2323
Medium Hindi/Eng.	Hindi medium	Registration Number		0520497
Centre	Mukherjee Nagar.	Date		13-09-2023

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।

2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।

3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रष्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवष्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।

2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।

3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।

4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।

5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।

6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Is student recommended for One-to-One mentoring?

Recommended	Strongly Recommended

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Structure and Flow**
3. **Dimensional Coverage**
4. **Language Competence**
5. **Length of Essays**
6. **Creativity Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

For one-to-one mentoring session on this copy, call us at 7042691891 or send an email to appointment@visionias.in

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- **Understanding of Topic**
- **Introduction Competence**
- **Body of Essay**
  - **Dimensions Covered**
  - **Shortcomings**
  - **Value Additions/ Missed Dimensions**
- **Conclusion Competence**
- **Organization of Essay**
- **Language and Expression**

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

All the Best

आज कोई वृक्ष की छाया में बैठा है क्योंकि किसी ने बहुत समय पहले वहां एक पौधा लगाया था।

"मैं अपने बचपन में कुछ बातों को लेकर हमेशा विस्मित, हर्षित और जादुई महसूस करता था। मुझे जब किसी चीज़ की जरूरत होती मिल जाती। थका-हारा घर आता, माँ खाना तैयार रखती। स्कूल जाता तो किताबें तैयार मिलती। आगे बढ़ा तो आगामी आवश्यकताएं पूरी होती चली गई। उन्हीं सुविधाओं की बदौलत मैं अपने व्यक्तित्व का विकास अब भी कर पा रहा हूं। कैसे? क्योंकि मेरी सभी जरूरतों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को मेरे परिवार, माता-पिता ने समय से पहले पहचाना और उनकी पूर्ति की। इन्हीं सब से मैं समय की कदम-ताल के साथ आगे बढ़ पाया हूं।"

यह कहानी सिर्फ राम अकेले की नहीं है, कमोबेश हम सभी की है और हर क्षेत्र, हर आयाम में इनसे संबंधित है।

वस्तुत समय के साथ सभ्यताओं ने नित नए मोड़ लिए और संस्कृतियों ने नित नई करवटें बदली। लेकिन जो चीज़ शाश्वत रही वह यह कि हमारे पूर्वजों द्वारा हमारे लिए तैयार की गई सुविधाएं जिनका

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उपयोग करते हुए हम आगे बढ़ आए और अब भी बढ़ रहे हैं।

यह सोच वास्तव में एक कल्पनाकारी दूरदर्शिता को दर्शाती है जिसमें भविष्य की आवश्यकताओं का चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए उनके पूर्व समाधान की कोशिश की गई है। वास्तव में हम सब ऐसे अनेकों कल्पनाओं से घिरे हुए हैं और आए दिन इनसे दो - चार होते रहते हैं।

अगर हम इतिहास के पन्नों को पलटें और ज्यादा दूर न जाते हुए सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन पर विचार करें तो हम जान पाएंगे की आज जो हम पढ़ रहे हैं, बल्कि खुली हवा में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

साँस ले रही है, वह राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर जैसे सुधारकों की बदौलत है। उनका लगाया पौधा ही आज हमें सामाजिक कुरीतियों की चिलचिलाती धूप से बचाए हुए है। वहीं दूसरी ओर भगत सिंह जैसे क्रांतिकारी जिन्होंने इंकलाब की खातिर हँसते हुए फाँसी के फंदे को गले लगा लिया, उन्होंने हमें आजादी की सौगात दी जहाँ हम किसी की आधीनता और शोषण से मुक्त हैं।

हमें यहाँ भारतीय संस्कृति की चर्चा अवश्य करनी चाहिए जो आज पूरे विश्व में भारत की एक विशिष्ट पहचान को प्रतिबिम्बित

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रदान करती है। हमारी गौरवशाली परंपराएँ, कलाकृतियाँ और स्थापत्य आज भी पूरे विश्व को अचंभे में डालता है और भारत की प्रगति का लोहा मानता है। अवश्य ही धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए उनका जिन्होंने इसे संजोए रखा। ना केवल पहचान बल्कि धरोहर के रूप में हमारी आर्थिकी को भी संस्कृति ने मजबूत बनाया है। वरन् वैश्वीकरण दरअसल अंध वैश्वीकरण की आंधी में हमें इसी वृक्ष का सहारा मिला है जिसका पौधा आज से हजारों साल लगाया गया था।

आगे बढ़ते हुए हम जब आज के राजनीतिक परिदृश्य को देखते हैं तो समझ आता है

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

कि भारत में लोकतंत्र, मौलिक अधिकार, सुगठित शासन सिद्धांतों के रूप ने हमें आगे बढ़ने में कितनी सहायता की है। इसके लिए हम ऋणी है भारत की संविधान सभा के बाबा साहब अम्बेडकर जी के जिन्होंने इस कल्याणकारी दूरदर्शिता को पहचाना।

आज की दुनिया का एक क्लोज अप लेने पर हमें महसूस होता है कि आइंस्टीन, एडीसन, डॉ० जगदीश चन्द्र बोस के पीछे कितने कारगर थे जो हमें आज क्वांटम विज्ञान, रोशन दुनिया और वायरलेस जैसे रूपों की आभा प्रदान कर रहे है। आज के विज्ञान युग में तो इनके अभाव के बिना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जीवन की कल्पना भी करना मुश्किल है।

भारतीय परंपरा में तो कल्याण और आगामी सोच एक रही बड़ी विशेषता है। संत तुलसीदास द्वारा कहा गया है कि "परहित सरिस धर्म नहीं भाई" अर्थात दूसरों के हित से बड़ा कोई धर्म नहीं है। वहीं परोपकार को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। इन्हीं विचारों और इनके अनुरूप किए गए कार्यों का ही परिणाम है कि भारत समाज में अहिंसा, सहनशीलता जैसे मूल्य विद्यमान है।

बौद्ध द्वारा बताए गए पंचशील या जैन धर्म के

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

के रूप में ना केवल दैनिक मानवीय जीवन बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का भी मार्गदर्शन कर रहा है। आज लोगों बच्चे अपना बचपन खुलकर जी रहे हैं क्योंकि कैलाश सत्यार्थी द्वारा बचपन बचाओ आंदोलन का बीज बोया गया। वनवासी और स्थानीय समुदाय अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए तत्पर है क्योंकि चिपको आंदोलन ने पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और लगाव का बीजारोपण किया।

अब हमारे लिए यह समझना कठिन नहीं है कि पूर्व के सराहनीय प्रयास वर्तमान में भी हमें किस तरह लाभ प्रदान कर रहे हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लेकिन यह कहना बहुत ही दुखपूर्ण है कि आज हम पौधों को खण्डित कर रहे है, उन वृक्षरूपी संदेशों, विचारों और भावनाओं का असम्मान कर रहे हैं।

मसलन जैसा पर्यावरणीय स्तर और जलवायु परिवर्तन या प्रकोप इस बात का ~~परिणाम~~ प्रमाण है कि हमने पूर्वजों द्वारा रोपित प्रकृति-मनुष्य संतुलन के पौधे को फलित नही होने दिया है। इसी के कारण आज हमारे अस्तित्व पर ही संकट आ गया है।

समाज में जातिगत भेदभाव, लैंगिक पूर्वाग्रह और सांप्रदायिकता जैसे प्रदूषित विचार एक प्रगतिशील और सर्वसमावेशी समाज की जड़ों पर

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

लगातार प्रहार कर रहे हैं। आज मात्र एक फीसदी लोगों के पास चालीस फीसदी संसाधनों का होना इस बात को दर्शाता है कि सरकार ने जो कल्पनाएँ राज्य नीति के निदेशक तत्वों और पंचवर्षीय योजनाओं में की थी उनको हमने अपने जीवन में आत्मसात नहीं किया। इसीलिए समावेशी एवं सतत् विकास का हल खण्डित प्रतीत होता है। हमें यह समझना होगा कि "बिना समावेशिता के कोई समाज कल्याण में अवनति की ओर तीव्रता बढ़ता जाता है।"

21 वीं सदी अनेकों संभावनाओं, चुनौतियों, अवसरों और खतरों से भरी हुई है। लेकिन सबसे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अच्छी बात यह है कि इनके समाधान के उपाय हमारे ऋषियों द्वारा पहले ही बता दिए गए हैं। जरूरत है तो हमें बस उन्हें समझने की और इस के रूप में फलित करने की। फिर चाहे यह वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा में हो या सर्वत्र वत्सा विश्वं कुटुम्ब के आगाज़ में। हमें बस समझना है और आत्मसात करना है।

अंतिम रूप से यही कहा जा सकता है कि मानव को अपनी उन मूल प्रवृत्तियों को पुन: जागृत करना होगा जो हमें हमारे पुरखों ने सिखाई है। अपने ऋषियों और उनकी शिक्षाओं का सम्मान करके

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

हम आतंकवाद, पर्यावरण निम्नीकरण, गिरते नैतिक मूल्यों जैसी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

और साथ ही हमें आगे भी ऐसे ही पौधों का रोपण करना चाहिए जो आगामी पीढ़ी को एक छायादार वृक्ष का लाभ प्रदान करें, उनको फलित करें। ऐसा मैं समझता हूँ कि हमारे माता-पिताओं और पूर्वजों ने हमारे लिए किया।

खण्ड–B / SECTION–B

यह समय भी हर समय की तरह, बहुत अच्छा है अगर हम जानते हैं कि इसमें क्या करना है।

"मैं समय हूँ,
मेरा कोई रंग नहीं, आकार नहीं
अच्छा हूँ, बुरा भी हूँ
लेकिन मैं हूँ
आप पर निर्भर
आप बनाते हैं
मुझे अच्छा या बुरा
क्योंकि मैं सिर्फ एक
उदासीन समय हूँ।"

उपर्युक्त पंक्तियां बहुत सरलता और सटिकता से आज समय उसके व्यवहार और समय के साथ हमारी अंतःक्रिया को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समझा रही है। इनके अनुसार समय का चरित्र निष्पक्ष है। अगर इसे अच्छा बनाना है तो हमें ही इसे अच्छा बनाना होगा और समझना होगा।

वस्तुतः मानव की इतनी लंबी विकास यात्रा में हमने सभ्यताओं और संस्कृतियों को अपने अपने ढंग से बदलता देखा है। लेकिन एक तत्व जो इन सब के साथ निरंतरता में विद्यमान रहा है, वह है समय। यह कभी दोस्त बनकर सामने आया तो कभी विरोधी, कभी पक्ष में रहा तो कभी विपक्ष में, कभी हम जान पाए तो कभी नहीं भी जान पाए। लेकिन समय ने सीख हमेशा प्रदान करी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समय को लेकर हमारे मन में अनेकों सवाल उमड़ते हैं। जैसे कि समय कैसा है? अच्छा या बुरा? जानना क्यों जरूरी है? समय को जानने से क्या लाभ और न जानने पर क्या हानि? इन्हीं प्रश्नों का विश्लेषण ही हमारे लक्ष्य तक पहुंचाएगा।

एक तरह से देखा जाए तो हमारा संपूर्ण जीवन ही समय में समाया हुआ है, हर जीवन का फलसफा समय की ही निर्मित है। समय ना अच्छा है और ना बुरा। इसे हम अच्छा बनाते हैं, अपने कार्यों से, इसे जानकर और पहचानकर। यह समय का ही तो खेल है कि एक अर्जुन जिसने महाभारत में विजय पताका लहराई, वहीं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भीलों से लड़ाई में हार बैठा और गोपियाँ हार गया। फ़र्क क्या रहा? समय का जाने का। इसीलिए संत तुलसीदास जी कहते थे कि -

"तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान।
भीलां लूटी गोपियाँ, वही अर्जुन वही बाण॥"

हम ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी इसे समझ सकते हैं। अमेरिका में जब दास-प्रथा के नाम पर उत्तर-दक्षिण विभाजन और गृहयुद्ध चल रहा था तब लिंकन ने समय की नाजुकता को समझा और दास प्रथा का अंत कर दिया जिससे अंततः अमेरिका में प्रगति हुई। वहीं दूसरी ओर तत्कालीन समय में ब्रिटेन और फ्रांस समय रहते हिटलर के विनाशकारी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा को

नहीं आज पाए जिसके कारण पूरी दुनिया ने द्वितीय विश्व युद्ध की विभिषिका झेली।

एक अन्य उदाहरण के तौर पर हम भारत छोड़ो आंदोलन के समय महात्मा गांधी की रणनीति को देख सकते हैं जिसके तहत उन्होंने समय को समझा और 'करो या मरो' का नारा दिया। इसके कुछ वर्षों बाद ही हमें आजादी मिल गई। सही समय की पहचान का यह एक अद्भुत उदाहरण है।

समय के संदर्भ में कहा जाता है कि यह बुरी बात है कि समय उड़ता है लेकिन अच्छी खबर यह है कि इसके पायलट आप हैं।" यह बात सही भी है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मध्यकालीन धर्म आधिपत्य व्यवस्था को भी देख लिया जाए जिसका अतः वैज्ञानिकों, पुनर्जागरण कालीन आंदोलनों के समय रहते कर दिया और दुनिया को लोकतंत्र की नई और खुशनुमा तस्वीर दिखाई।

यहाँ भारत के संदर्भ में विचार करना समीचीन होगा कि कैसे भारत ने कदम-कदम पर अपनी आवश्यकताओं और समय को पहचानते हुए आपसी संतुलन स्थापित किया। सर्वप्रथम यह कि तत्कालीन परिस्थितियाँ और चीन, पाकिस्तान उग्रता को देख भारत द्वारा परमाणु परीक्षण किए गए (सन् 1974) जिसके बाद एशिया में शक्ति संतुलन में भारत ने अपनी मजबूती दर्शायी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वहीं आज ही त्वरित प्रभाव से 1991 के आर्थिक सुधारों को अपनाना समय की सटीकता जानने का ही उदाहरण था जिसका परिणाम हमें 2008 की वैश्विक मंदी के दौर में भी फलती-फूलती अर्थव्यवस्था के रूप में मिला।

लेकिन यहाँ कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं जो दूसरा पक्ष उजागर करते हैं जहाँ हमने समय की मांग को नहीं समझा। जैसे समय रहते विनिर्माण और उद्योग में सुधार न करना आज गरीबी बेरोजगारी और बढ़ते असंतोष के दुष्चक्र के रूप में हमारे सामने खड़ा है। यहाँ भी वैसे ही सुधारों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की आवश्यकता है जो हमने समय पर अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनाए। इन्ही अंतरिक्ष प्रयासों का परिणाम चंद्रयान-3 की बड़ी सफलता की शक्ल में हमारे सामने आया है।

आगे बढ़ते हुए हमें समझना चाहिए कि समय को जानकर और व्यवस्थित कर हम असीमित ऊंचाईयों को भी छू सकते हैं और अकल्पनीय गहराईयों को भी प्राप्त कर सकते हैं। जैसे पाकिस्तान द्वारा समय रहते अपनी सेना को नियंत्रित न कर पाने ने उसे लगभग तीन दशक पीछे धकेल दिया है। समय की हानि, समय के ही रूप में, यही समय की सबसे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बड़ी सीख है।

ऐसा ही एक उदाहरण कोविड-19 महामारी के दौर का विश्व पर उचित समय से ध्यान न देना पूरे विश्व के लिए काल बनकर आया। करोड़ों जानें इसके द्वारा लील ली गई। इसके पीछे केवल महामारी नहीं बल्कि समय की अनभिज्ञता भी एक कारक है।

वर्तमान दृष्टिकोण से देखें तो आज पर्यावरण निम्नीकरण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी विनाशकारी आपदाएं उभर रही हैं। ये समय को ना समझते हुए अतिशय दोहन व उपभोग का ही परिणाम है। लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि वह समय ही है जिसे जानकर हम

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस चुनौती का सामना कर सकते हैं। वरन मानवता को धूल में मिलते ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। यहाँ हम मुजफ्फर रज्मी की पंक्तियों से इसके महत्त्व को समझ सकते हैं।—

"ये जब्र भी देखा है तारीख की नज़रों ने
लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई।।"

अब हमारे लिए यह समझना कठिन नहीं है कि क्यों समय को जानना जरूरी है। लेकिन यह भी समझना महत्त्वपूर्ण है कि कुछ परिस्थितियों में समय भी उदासीन होता है, और हम समय में कुछ करने में भी असमर्थ होते हैं। फिर भी हमें ऐसी परिस्थितियों में

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सही समय का इंतज़ार करना चाहिए और अवसर पाते ही त्वरित वांछनीय अनुक्रिया करनी चाहिए।

आज की दुनिया में समय का प्रबंधन ही सबसे बड़ी चुनौती है। समय के प्रबंधन के साथ यह समझना कि कैसे और क्या अनुक्रिया की जाए की भी समझ होनी चाहिए। इसीलिए समय के बारे में कहा जाता है कि हम समय को हरा पाएंगे या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमने उस समय में क्या किया।

अंतिम रूप से यही कहा

जा सकता है कि 21वीं सदी में जिस तरह के खतरे और अवसर विद्यमान है, वे वास्तव में समय को सबसे बड़े बलवान के रूप में स्थापित करते है।

समय की सही समझ मानवता को वहाँ ले जाएगी जहाँ कल्पना और खुशी से भरा समाज आलोकित होगा। साथ ही ऐसा रामराज्य स्थापित करने में सहायता करेगी जिसका समय को भी इंतज़ार है।

SPACE FOR ROUGH WORK

काल कोई इसकी छाया में बैठा है क्योंकि किसी ने बहुत लगन पहले यहां एक पौधा लगाया था

Start - कहानी - पिताजी और बच्चों के मध्य [illegible]?

Intro - ये कहानी दर्शाती है कि किसे हमारी इसी पीढ़ी ने हमारे लिए कितना किया है

सकता - संस्कृति [illegible]

यह चलता रहा है किसी के [illegible]

कर रहा है

सौ रहे हैं

[illegible] के लिए

[illegible]

[illegible] के लिए

कर्म / [illegible] - आगामी [illegible] प्रकृति को दर्शाता है।

परहित [illegible]

[illegible]

जीवन के अनेक [illegible] तक विस्तार

क्रांतिकारियों [illegible] के जो बलिदान को [illegible] है

महात्मा गांधी के [illegible]

इतिहास - भारतीय संस्कृति ही तो है [illegible] तक हमारी [illegible]

हम [illegible] [illegible] की हम [illegible] ले रहे हैं

राजनीति - [illegible]

संविधान [illegible]

सामाजिक

SPACE FOR ROUGH WORK

नेहरू के कारण · पंचशील सिद्धांत.

वैज्ञानिक — इसरो / आइंस्टीन. / डा. बाबू रवीन्द्र सिंह

प्रत्येक व्यक्ति के साथ
आज तक बीती हुई
लेकिन अब छूट रही है.

मनोवैज्ञानिक

सरकार — कल्पना के सपना

लेखक — साहित्य सामाजिक.

जनित ज्ञानार्जन

इनके प्रभावित हैं आलोचना कार्यकाल को.

कार्यकर्ता — सिविल आंदोलन / कैलाश सत्यार्थी.

इन इतना नहीं चाहिए

यह देखी इनके प्रतियों से उत्पन्न. / सशक्तिकरण

बड़ाईयां.

परंतु रहते रहे हैं — सामाजिक बुराइयां / सांप्रदायिकता / आर्थिक असमानता (1% - 40%)

जिनकी समावेशिता से समाज प्रगति की और उन्नत.

नीति — मानव मूल्य से नैतिक प्रवृत्तियों का समावेश करना चाहिए.

आशावादी निष्कर्ष

SPACE FOR ROUGH WORK

मनुष्य समाज की हर आगम की तरह बहुत कच्चा है, किन्तु हम यह जानते हैं कि इसमें क्या करना है।

कविता → बेहद मार्मिकता में हम क्या रही कि समाज की मूल प्रकृति क्या है. जीवन की इच्छा है, या [illegible] उसके लिए प्रेरणा. [illegible] तो यह [illegible] ही [illegible] है [illegible] सांस्कृतिक ही में [illegible] आए हैं.

↓

इतिहास & व्याख्याकरण ← फिर कई बार, बातें समाज के अंदर में अनेक प्रश्न उठते हैं और क्या या क्यों [illegible] लाए गए. [illegible] व जीवन पर क्या होगा? [illegible] परिणाम तक.

जीवन बहुत [illegible]

(मैं आलसी हूँ, उदासीन हूँ, कमज़ोर हूँ, बुरा भी हूँ, लेकिन फिर हूँ, काम पर काम करते हैं इसे अपना मन बुरा है तो फिर आदर्शवादी समाज हूँ)

↓

आरंभ — [illegible] इतना की सारा जीवन समाज में था है हर काल तक विस्तार.

महात्मा गांधी जानते थे समाज की [illegible], भारत छोड़ो के समय करो या मरो का नारा दिया ← ऐतिहासिक दृष्टिकोण → (हिटलर विरोध - [illegible] अब नहीं) ↓ [illegible]

↓ लेकिन - [illegible] सामाजिक [illegible]

↓

[illegible] ← राजनीतिक → [illegible] = [illegible] ↓ [illegible]

समाज - [illegible] पालन [illegible]

↓

महाभारत का विनाश → समाज की [illegible] 2000 ई. [illegible] का [illegible].

SPACE FOR ROUGH WORK

[illegible]

1920 [illegible]

[illegible] - 3

भारत - [illegible]

1991 के [illegible] 2003 [illegible]

[illegible]

[illegible] - 2 [illegible]

[illegible]

COVID-19.

[illegible]